सामाजिक विज्ञान में आकलन और मूल्यांकन

आकलन और मूल्यांकन हर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। आकलन का उद्देश्य न केवल सीखने का आकलन करना है, बल्कि " अधिगम के लिए आकलन" पर भी ध्यान केंद्रित करना है। आकलन के लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग और छात्र सीखने की निरंतर वृद्धि के लिए एक उपकरण का होना आवश्यक है। बेशक, यह शिक्षक के लिए एक चुनौती है। फिर से, आकलन का प्राथमिक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि उसके द्वारा तैयार किए गए शिक्षण उद्देश्यों को उचित आकलन विधियों के माध्यम से प्राप्त किया जाए।

अनुदेशात्मक उद्देश्यों के लिए आकलन: अनुदेशात्मक उद्देश्यों के लिए आकलन का अर्थ अनिवार्य रूप से "अधिगम के लिए आकलन" है। आकलन का उद्देश्य न केवल शिक्षार्थियों को प्रमाणित करना है, बल्कि उन्हें सीखने की कठिनाइयों और इन कठिनाइयों को दूर करने के तरीके को समझने में मदद करना है। जैसा कि पहले कहा गया है, शिक्षक की चुनौती शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आकलन को एकीकृत करना है

प्रमाणीकरण के लिए आकलन और मूल्यांकन: शिक्षार्थियों को प्रमाणित करने के लिए, एक प्रकार के योगात्मक मूल्यांकन को समय-समय पर करने की आवश्यकता होती है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सामान्य अभ्यास शिक्षार्थियों को औपचारिक या वार्षिक रूप से प्रमाणित करना है। इसलिए, टर्म एंड परीक्षा या सेमेस्टर एंड परीक्षा सीखने के लिए टर्मिनल व्यवहार के स्तर को जानने और प्रमाणित करने के लिए आयोजित किए जाते हैं। इसलिए, सतत और व्यापक मूल्यांकन और टर्मिनल मूल्यांकन दोनों शिक्षार्थियों के अंतिम प्रमाणीकरण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं

स्कोलास्टिक आकलन: स्कोलास्टिक आकलन विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों में शिक्षार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं के मूल्यांकन को संदर्भित करता है जो विभिन्न विषयों से जुड़े होते हैं। इसलिए, संज्ञानात्मक क्षेत्रों में वे सभी क्षमताएं अर्थात् ज्ञान, समझ, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन और रचनात्मकता विद्वान क्षमताएं हैं।

सह-स्कोलास्टिक क्षमताओं का आकलन: सह- स्कोलास्टिक क्षमताओं का आकलन एक व्यापक मूल्यांकन प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। सह-स्कोलास्टिक मूल्यांकन का उद्देश्य शिक्षार्थी के जीवन कौशल, दृष्टिकोण, रुचियों, मूल्यों, सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों और शारीरिक स्वास्थ्य से संबंधित वांछनीय व्यवहार का मूल्यांकन करना है। CBSE द्वारा पहचाने जाने वाले प्रमुख सहशैक्षणिक क्षेत्र जीवन कौशल, कार्य शिक्षा, दृश्य और प्रदर्शन कला, दृष्टिकोण और मूल्य और सह-पाठयक्रम गतिविधियाँ हैं। जीवन कौशल में आत्म-जागरूकता, समस्या को हल करना, निर्णय लेना, महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मक सोच, पारस्परिक संबंध, प्रभावी संचार, सहानुभूति, भावनाओं को प्रबंधित करना, तनाव से निपटना शामिल है।

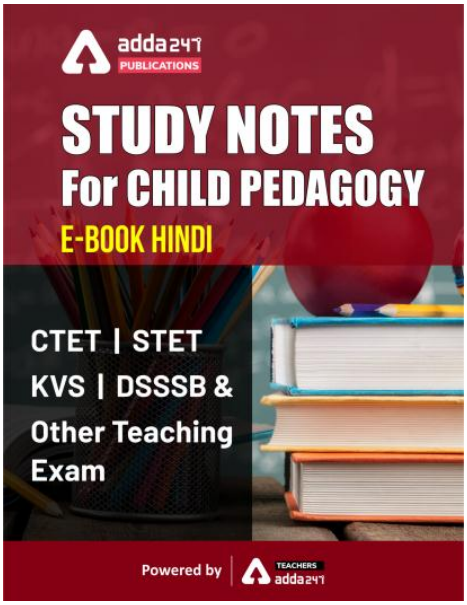

Table 1: Types of Assessment and their Functions

Areas of Function	Types of Assessment and their functions
After Instructional Process	Summative Evaluation (to certify the learner)
During Instructional Process	Diagnostic Evaluation (to solve learning difficulties)
	Formative Evaluation (to know mastery in content)
Before Instructional Process	Placement Evaluation (to know entry behaviour)

मूल्यांकन के प्रकार

स्थानान मूल्यांकन: शिक्षार्थियों के प्रवेश व्यवहार या पिछले ज्ञान को मापने के लिए शिक्षण-अधिगम गतिविधियों के संगठन से पहले स्थानान मूल्यांकन किया जाता है।

औपचारिक मूल्यांकन: वर्ष 1967 में पहली बार, मिशेल स्क्रिवेन ने पाठ्यक्रम मूल्यांकन के क्षेत्र में औपचारिक मूल्यांकन की अवधारणा का उपयोग किया। स्क्रिवन (1991) ने इसे इस रूप में परिभाषित किया, "औपचारिक मूल्यांकन आमतौर पर किसी कार्यक्रम या उत्पाद (या व्यक्ति, और इसी तरह) के विकास या सुधार के दौरान आयोजित किया जाता है और यह सुधार करने के लिए हद के साथ कार्यक्रम के घर के कर्मचारियों के लिए अक्सर एक से अधिक बार आयोजित किया जाता है।"

नैदानिक मूल्यांकन: नैदानिक मूल्यांकन निर्देशात्मक प्रक्रिया के दौरान प्रारंभिक मूल्यांकन के साथ किया जाता है। यह प्रारंभिक मूल्यांकन से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर किया जाता है। नैदानिक मूल्यांकन विशेष रूप से सीखने की कठिनाइयों की पहचान करने और उन्हें हल करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि यह पाया जाता है कि एक शिक्षार्थी ने सामाजिक विज्ञान विषय में कुछ अवधारणाओं को नहीं समझा है या सामाजिक विज्ञान विषय में नियमित रूप से खराब प्रदर्शन नहीं दिखा रहा है, तो उसे इन अवधारणाओं को समझने में मदद करने के लिए, नैदानिक मूल्यांकन किया जाता है और उपचार प्रदान किया जाता है।

योगात्मक मूल्यांकन: शिक्षार्थियों के टर्मिनल व्यवहार को जानने के लिए योगात्मक मूल्यांकन किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन में मुख्य शब्द "प्रमाणीकरण" है। पूरे पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद योगात्मक मूल्यांकन किया जाता है। योगात्मक मूल्यांकन में प्रदान की गई प्रतिक्रिया प्रकृति में टर्मिनल है और इसे शिक्षार्थियों के व्यवहार के संशोधन के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता है क्योंकि यह एक शब्द के अंत में आयोजित किया जाता है।